विधान परमार्थ के अल्पज्ञ साधकों के लिए ही है। परन्तु ये विधान तभी अर्थ रखते हैं, जब यथार्थ में कृष्णभावना का आस्वादन कर लिया जाय। जो यथार्थ में कृष्णभावनाभावित हो गया है, उसके लिए इस संसार के सब मन्द भोग स्वतः नीरस हो जाते हैं।

22.2

यततो ह्यपि कौन्तेय पुरुषस्य विपश्चितः।
इन्द्रियाणि प्रमाथीनि हरन्ति प्रसभं मनः।।६०।।

यततः=यत्न करते हुए; **हि**=निःसन्देह; **अपि**=भी; **कौन्तेय**=हे कुन्तीनन्दन; **पुरुषस्य**=मनुष्य की; **विपश्चितः**=विवेक ज्ञान से युक्त; **इन्द्रियाणि**=इन्द्रियाँ; **प्रमाथीनि**=उत्तेजित; **हरन्ति**=हर लेती है; **प्रसभम्**=बलपूर्वक; **मनः**=मन को।

अनुवाद

हे अर्जुन! इन्द्रियाँ इतनी बलवान् तथा वेगवती हैं कि उस विवेकी पुरुष के मन को भी बलपूर्वक हर लेती हैं, जो उन्हें वश में करने के लिए प्रयत्न कर रहा हो ॥६०॥

तात्पर्य

ऐसे कितने ही विद्वान् मुनि, दार्शनिक एवं योगी हैं, जो इन्द्रियनिग्रह के लिए प्रयत्नशील रहते हैं। किन्तु यथासम्भव प्रयास करते हुए उनमें बड़े से बड़े भी मन की उत्तेजना के कारण इन्द्रियतृप्ति रूपी अन्धकूप में पतित हो जाते हैं। महामुनि योगिराज विश्वामित्र उग्र तपश्चर्या एवं योगाभ्यास द्वारा इन्द्रियनिग्रह के लिए उद्यमशील थे; परन्तु वे भी मेनका के साथ मैथुन में प्रवृत्त होकर परमार्थ-पथ से भ्रष्ट हो गये। विश्व-इतिहास में इसके समान अगणित दृष्टान्त उपलब्ध हैं। अतः पूर्णतया कृष्णभावनाभावित हुए बिना मन और इन्द्रियों को वश में करना दुःसाध्य है। श्रीकृष्ण में मन को निवेशित किये बिना विषयभोग का त्याग नहीं किया जा सकता। भक्तशिखामणि श्रीयामुनाचार्य ने इस सन्दर्भ में अपनी निजी अनुभूति का उल्लेख किया है। वे कहते हैं: 'जिस समय से मन को श्रीकृष्णचरणारविन्द की सेवा में नियोजित करके मैं नित्य नूतन भगवद्रस का आस्वादन करने के प्रवृत्त हो गया हूँ, तब से स्त्री-संग का विचार आते ही मेरा मुख विकृत हो जाता है, यहाँ तक कि उस विचार पर ही उद्वमन (थू-थू) करने लगता हूँ।'

कृष्णभावना इतनी दिव्य, सर्वांग सुन्दर और मधुरिमामयी है कि उसके प्रभाव से विषयभोग स्वतः नीरस हो जाता है, मानो पुष्टिदायक भरपेट भोजन करने से भूखे की भूख निवृत्त हो जाय। कृष्णभावना के प्रताप से महाराज अम्बरीष ने दुर्वासा मुनि जैसे महायोगी तक को निरस्त कर दिया था।

22.2

तानि सर्वाणि संयम्य युक्त आसीत मत्परः।
वशे हि यस्येन्द्रियाणि तस्य प्रज्ञा प्रतिष्ठिता।।६१।।

तानि=उन; **सर्वाणि**=सब इन्द्रियों को; **संयम्य**=वश में करके; **युक्तः**=तत्पर हुआ; **आसीत**=स्थित हो; **मत्परः**=मेरे परायण; **वशे**=वश में होती हैं; **हि**=निःसन्देह;